संघर्षमय जीवन की महागाथा : मणिकर्णिका

अपर्णा भारती

शोध सार

मणिकर्णिका आत्मकथा तुलसीराम के संघर्षमय जीवन की गाथा है। इसकी भूमिका में लेखक लिखते हैं- “बनारस की मणिकर्णिका किसी के भी अस्तित्व को हमेशा के लिए मिटा देती है किन्तु मेरे साथ एकदम उल्टा हुआ। बनारस में मेरा जन्म ही वहीं से शुरू हुआ, फिर भी मै उन चंद लोगों में शामिल हो गया, जो जीते जी शोकांजलि के शिकार हो गए।”[1] उच्च शिक्षा प्राप्त करने के उद्देश्य से विश्वविद्यालय में दाखिले के लिए पैसे कमाने के लिए वह कलकत्ता काम करते हैं। भविष्य की चिंता उनके सामने बराबर बनी रहती है और फूट-फूटकर रोने पर मजबूर कर देती है। भविष्य की अनिश्चयता से ऊबकर कई बार आत्महत्या का ख्याल उनके मन में आता है किन्तु स्वयं पर बुद्ध का प्रभाव होने से आत्महत्या को पाप समझकर संघर्षों से जूझकर जीवन जीने की ललक उनके अंदर पैदा हो जाती है।

बीज शब्द

अस्तित्व, संघर्ष, उच्च शिक्षा, जातिवाद, बौद्ध धर्म, मार्क्सवादी विचार, कम्युनिस्ट पार्टी, भुखमरी, गरीबी, आत्महत्या, भविष्य आदि।

मूल आलेख

तुलसीराम हिन्दी के बड़े रचनाकारों में अपना महत्वपूर्ण स्थान रखते हैं। उत्तरप्रदेश के आजमगढ़ जिले के धरमपुर गाँव में एक दलित परिवार में इनका जन्म हुआ था। दलित होने के कारण उन्हें जीवन बहुत संघर्षों का सामना करना पड़ा था। मार्क्स,बुद्ध तथा डॉ. अम्बेडकर को अपना नायक मानते थे। वे दलित कम, मानवतावादी लेखक के रूप में ज्यादा प्रसिद्ध हैं- आखर सगुन के अनुसार-“तुलसीराम वर्ण-व्यवस्था से भी अधिक अमानवीयता के खिलाफ लड़ते दिखाई पड़ते हैं और अपने मानवीय प्रेम के कारण वैचारिक विरोध के बावजूद लोगों से संवाद कायम रख पाने में सफल रहते हैं।”[2] इन्होंने हिन्दी में दो भागों में आत्मकथा लिखी है-‘मुर्दहिया’ और ‘मणिकर्णिका’। मणिकर्णिका में बनारस में उनके जीवन संघर्ष का वर्णन है। दलित जाति से होने के कारण यहाँ भी वह जाते उन्हें निराशा ही हाथ लगती। बनारस विश्वविद्यालय में दाखिले के लिए उन्हें संघर्षों का सामना करना पड़ता है। मित्र तपसीराम की मदद से दाखिला तो उन्हें मिल जाता है परन्तु संघर्ष जारी रहता है। बनारस में गैर-दलित लोग दलितों को किराए पर मकान नहीं देते थे। वह झूठ बोलकर कमरा तो ले लेते हैं, परन्तु जल्द ही भेद खुल जाता है। घर की मालकिन उनके चेचक वाले चेहरे पर निशाना साधते हुए कहती है- “ए के त म पहिले दिनवा देखते समझि गईलो कि ई जरुर चमार होई।”[3] रात को ही कमरा खाली करके वह आश्रम में रात बिताते हैं। निम्न जाति का होने के कारण उन्हें मंदिर में प्रवेश नहीं करने दिया जाता है। मंदिर की ओर जाता देख सभी पंडित, पुजारी मारने के टूट पढते हैं-“त्रिलोकी नाथ जोर से बोले चमार सियार मंदिर में नही आ सकते। चिमटे वाला पुजारी प्रहार करने की मुद्रा में मेरी तरफ दौड़ा। मैं स्थिति की गंभीरता को देखते हुए बड़ी

तेजी से बी.एच.यू. की तरफ भागा। यदि मैं तेज रफ़्तार से भागता नहीं तो मेरी धार्मिक पिटाई निश्चित थी।"[4] गरीबी उनके लिए मुख्य समस्या थी। खाना पकाने के लिए अनाज न होने और पैसे का अभाव तो हमेशा ही उनके पास होता है जिस कारण कुछ खरीद पाना उनके लिए संभव नहीं होता है। एक बार वह नो दिन भूख से तड़पते हुए काटते हैं। अपनी एक कोर्स की किताब बेचकर नवरात्रि व्रत तोड़ते हैं। बनारस के विषय में बचपन में अध्यापक से सुनी हुई कुछ पंक्तियाँ उन्हें याद आती हैं-"बनारस में कोई भूखा नहीं रहता है,कहीं न कहीं से शाम को खाना अवश्य मिल जाता है। मेरा उनकी इस धारणा से अटूट विश्वास हो गया था, किन्तु भदैनी में यह विश्वास टूटकर चकनाचूर हो गया। मुझे पहली बार ऐसा लगा की मान्यताओं या आस्थाओं से ज़िन्दगी नहीं चलती।"[5] भुखमरी की समस्या उनके लिए सबसे विकराल थी। परिणामस्वरूप कक्षाओं में उनकी उपस्थिति घटने लगी-"मैं दोपहर बाद अकसर आर्ट्स कॉलेज के सामने स्थित विशाल ऐम्फी थिएटर ग्राउंड में उस समय चला जाता, जब वहाँ कोई दूसरा नहीं होता। पढ़ाई अब छूटी की चिंता अश्रुधारा में बदल जाती थी।"[6] कक्षा में कोई भी उच्च जाती का छात्र उनके पास नहीं बैठता। जाति के कारण पग -पग पर अपमानित होना पड़ता है, किन्तु वह हिम्मत नहीं हारते, बल्कि उनका आत्मविश्वास और बढता जाता है-"यदि मैं ईश्वर को खदेड़ सकता हूं, तो इन जातिवादी मनुष्यों को क्यों नहीं? इस बार पक्का इरादा कर लिया था कि जातिवाद से भविष्य में डरूंगा नहीं, बल्कि मुकाबला करूँगा। बनारस में यह विचित्र स्थिति थी कि मकान तो किराए पर मिलता था, किन्तु जातिवाद मुफ़्त में।"[7]

तुलसीराम पर बुद्ध और मार्क्सवाद का प्रभाव रहा है।उनके उपदेशों से प्रभावित होकर वह जीवन में आगे बढ़ते जाते हैं-"दुनिया में जो कुछ पैदा होता है, वह नश्वर है; दुनिया हर क्षण परिवर्तित हो रही है, परिवर्तन का नियम ही एक ऐसा नियम है, जो कभी भी परिवर्तित नहीं होता; इसीलिए दो अच्छी वस्तुएं हमेशा एक साथ नहीं रह सकती। अत: दुख अवश्यम्भावी हो जाता है, जैसे हर दीपक के नीचे अंधेरा होता है। फलत: जीवन भी दुख है, मरण भी दुख है, अप्रिय का मिलन भी दुख है, प्रिय का बिछडन भी दुख है, आदि-आदि।"[8] बनारस में जो कमरा उन्हें मिलता है उसमें बिजली की सुविधा नहीं होती है। लैंप जला कर पढ़ते हैं, लैंप के नीचे अंधेरा होने के कारण किताब को उसके आगे-पीछे घुमाते रहते हैं-"उस समय बुद्ध का यह कहना मुझे हमेशा याद रहता था कि हर सुख का पीछा दुख वैसे ही करता है, जैसे हर दीपक के नीचे अंधेरा होता है।"[9] भुखमरी और गरीबी के चलते शिक्षा बंद हो जाने की संभावना से कई बार उनके मन में आत्महत्या की कल्पना उनके दिमाग में आती है परन्तु बुद्ध की सीख उन्हें हर बार बचा लेती। बुद्ध आत्महत्या या नरहत्या के एकदम खिलाफ थे-"जो भिक्षु मानव हत्या करे या आत्महत्या के लिए हथियार लावे या मरने की तारीफ करे या कहे कि जीने से मरना अच्छा है, वह पाराजिक होता है।''[10]

घर से बाहर रहते हुए वह मांस, मछली आदि खाने बैठते तो उनका ध्यान अपने परिवार की तरफ चला जाता है कि उनके भाई अब भी अधपेटवा का जीवन व्यतीत कर रहे होंगे साथ ही माता-पिता भी। उच्च शिक्षा का लालच उन्हें भारत में क्रांति करने के लिए उत्साहित करता है,देश में क्रांति होगी और

समाजवादी व्यवस्था लागू होगी। इस पर जोर देते हुए कहते हैं कि इससे उनके परिवार की हालत में भी सुधार आएगा तथा कोई भूखा नंगा नहीं रहेगा। यदि ऐसा करने में उनका भी योगदान होगा, तो इतिहास का हिस्सा बन जाऊंगा। इस पर उनका कहना है-"इस तरह मैं अपना सब कुछ लुटा देने पर आमादा हो गया तथा ऐसी क्रांति की कल्पना का एक अटूट हिस्सा बन गया। इस तरह मार्क्सवाद के प्रति मेरी कट्टरता बढ़ती चली गई।"[11] तुलसीराम कम्युनिस्ट पार्टी में सक्रिय सदस्य रहे हैं परन्तु एक समय ऐसा आता है जब उन्हें पार्टी में संघर्षों का सामना करना पड़ता है उनका दलितों पर किए जा रहे अत्याचारों पर लेख लिखना पार्टी के लोगों को पसंद नहीं आता है। वह जातीय अत्याचार पर लेख लिखते हैं जिसमें वह इस बात का उल्लेख करते हैं- "ऐसे जातिवादियों के बावजूद डॉ.अम्बेडकर जैसे एक दलित ने भारत का संविधान लिखा था।"[12] पार्टी का एक अन्य सदस्य नरेंद्र प्रसाद सिन्हा छपने से पहले इस वाक्य को निकलवा देते हैं और बाद में उनके सामने यह रहस्य खुलता है कि कम्युनिस्ट पार्टी की निगाह में उनका कोई महत्व ही नहीं है- "मुझे यह भी प्रतीत हुआ कि जब कोई उच्च जाति का व्यक्ति दलितों पर किए जाने वाले अत्याचार पर लिखता या बोलता है, तो वह समाज सुधारक कहलाता है, किन्तु जब वही बात कोई दलित लिखता या बोलता है, तो उसे जातिवादी मान लिया जाता है। पार्टी में कुछ ऐसा ही संयोग मेरे साथ जुड़ गया।"[13] तमाम विवादों के बीच नरेंद्र प्रसाद सिन्हा उनके एकदम विरोध में आ जाते हैं और टाइमरी से प्रतिमाह मिलने वाली मज़दूरी को जनरल सेक्रेटरी से कहकर बंद करवा देते हैं, स्वयं उनका इस विषय में कहना है- "मेरे ऊपर आरोप लगाया गया कि मैं पार्टी का काम ठीक से नहीं कर रहा था। हकीकत तो यह थी कि पार्टी के अलावा एक पल भी मैं कुछ और नहीं सोचता था। पार्टी में मेरी आस्था पर यह एक गहरी चोट थी।"[14] इस सन्दर्भ में धीरजभाई वणकर की टिपण्णी सार्थक सिद्ध होती है- "जाति व्यवस्था का अमानवीय रूप तथा उससे संघर्ष का सामना एक दलित को कैसे करना पड़ता है, इसे तुलसीराम ने बड़ी ईमानदारी से बेनकाव किया है। वस्तुतः इस कृति ने दलित आत्मकथा साहित्य में एक नए विमर्श का सूत्रपात किया है।"[15]

बनारस विश्विद्यालय में छात्रसंघ पर प्रतिबंद लगाए जाने पर अन्य छात्रों के साथ छात्रसंघ बहाल किए जाने की मांग को लेकर हड़ताल कर देते हैं। शांतिभंग किए जाने के आरोप में उन्हें गिरफ्तार करके जेल में डाल दिया जाता है परिणामस्वरूप उन्हें स्नातक की फाइनल परीक्षा से वंचित रहना पड़ा। परीक्षाओं में न बैठ पाने के कारण बहुत चिंतित रहने लगते हैं किन्तु वह छात्रसंघ के मामलों में सक्रिय रहते हैं कारणवश उन्हें एक बार फिर गिरफ्तार कर लिया गया। उन पर अन्य आपराधिक धाराएं भी लगा दी गई। पुलिस उन्हें नक्सलवादी समझती थी जबकि उनके साथ उनका कोई सम्बन्ध नहीं था-"कुल मिलाकर मैं लगभग एक महीना चौकाघाट जेल में रहे। इसके बाद बनारस की कम्युनिस्ट पार्टी के जनरल सेक्रेटरी गिरिजेश राय ने मुझे ज़मानत पर जेल से रिहा करवा लिया।"[16] संघर्षों से परिपूर्ण जीवन में ईश्वर के प्रति उनकी आस्था खत्म हो जाती है। वह पूर्णरूपेण नास्तिक हो जाते हैं। उनका मानना है ईश्वर हमेशा डरपोक दरवाज़े से ही दस्तक देता है, उसको चुनौती देने के लिए मनुष्य का साहसी होना आवशक है- "नास्तिकता ने मुझे हद से ज्यादा मानवीय बना दिया। मैं विशुद्ध रूप

से मानवता का पुजारी बन गया। जो लोग मानवता की बात करते हुए ईश्वरीय अंधविश्वासों की वकालत करते हैं, मैं उन्हें सबसे बड़ा पाखंडी और डोंगी समझने लगा।"[17]

तुलसीराम का प्रेममय जीवन भी कम संघर्षमय नहीं रहा है। उन्होंने अपने जीवन में आई तीन लड़कियों के साथ अपने प्रेम प्रसंगों का वर्णन किया है- उत्पलवर्ना, टामुन एवं सबीहा। तीनों में से किसी एक का भी उन्हें जीवन भर का साथ नहीं मिल पाता है। कमलानंद झा के शब्दों में- "प्रेम के वियोग पक्ष का इतना मार्मिक उद्घाटन मणिकर्णिका को आधुनिक काल का उन्नत वियोग गद्य रचना सिद्ध करता है।"[18] अपने प्रेम प्रसंगों के विषय में तुलसीराम की स्पष्ट स्वीकारोक्ति है कि "चाहे क्रांति का सपना हो या एकतरफ़ा प्यार मैंने दोनों का खूब मजा लिया। जब दोनों मामलों में धराशायी हो गया, तो उठते ही दिल्ली भाग गया।''[19]

निष्कर्षत: मणिकर्णिका तुलसीराम के जीवन-संघर्ष की महागाथा है। यह आत्मकथा न केवल दलित आत्मकथाओं में अपना विशिष्ट स्थान रखती है, बल्कि ये हिन्दी की अनूठी कृति है। इसमें जातिगत भेदभाव, गरीबी, भुखमरी, कम्युनिस्ट आन्दोलन और जातिवाद से उठते प्रश्नों एवं संघर्षों की बेबाक अभिव्यक्ति है। मनिंदरनाथ ठाकुर के शब्दों में- "यह आत्मकथा अपने प्रताड़ित होने का रोना नहीं है, बल्कि समाज को समझने और मानवीय संबंधों को समझने का और एक खास दृष्टि बिंदु से समझने का प्रयास है। इसमें समाजशास्त्रीय विश्लेषण भी है, मनोवैज्ञानिक गहराई भी और साहित्यिक संवेदना भी है।''[20] इसमें भारतीय समाज के ताने- बाने की उन बारीकियों को रेखांकित किया गया है जिनके चलते सामान्य व्यक्ति का जीना दूभर हो जाता है परन्तु तुलसीराम की जिजीविषा का इन विपरीत परिस्थितियों में भी हार न मानना और इनसे दो चार होते हुए अपने लिए स्थान बना लेना, निःसंदेह आगामी पीढीयों के लिए प्रेरणास्रोत है।

सन्दर्भ -

1 तुलसीराम: मणिकर्णिका (भूमिका), राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, पृष्ट 5

2 स. लीलाधर जंगूडी: नया ज्ञानोदय, जुलाई – २०१५ , पृष्ट 74

3 तुलसीराम: मणिकर्णिका, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली , पृष्ट 37

4 वही, पृष्ट 68

5 वही, पृष्ट 43

6 वही, पृष्ट 49

7 वही, पृष्ट 66

8 वही, पृष्ट 16

9 वही, पृष्ट 62

10 वही, पृष्ट 82

11 वही, पृष्ट 98

12 वही, पृष्ट 170

13 वही, पृष्ट 170 – 171

14 वही, पृष्ट 173

15 स. विश्वनाथ प्रसाद तिवारी, चंद्रशेखर कंबार और के. श्रीनिवासराव समकालीन भारतीय साहित्य, पृष्ट 187

16 तुलसीराम: मणिकर्णिका, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली पृष्ट 134

17 वही , पृष्ट 63

18 एकान्त श्रीवास्तव और कुसुम खेमानी , वागर्थ , पृष्ट 27

19 तुलसीराम : मणिकर्णिका (भूमिका), पृष्ट 6

20 स.विश्वनाथ प्रसाद तिवारी, चद्रशेखर कंबार और के. श्रीनिवासराव समकालीन भारतीय साहित्य, पृष्ट 187

अपर्णा भारती